IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, March 2023

भारत में ग्रामीण विकास की अवधारणा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

संगीता कुशवाहा
शोधार्थी समाजशास्त्र
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा (म.प्र)

डॉ. किरण सिंह
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जिला सतना (म.प्र.)

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध पत्र 'भारत में ग्रामीण विकास की अवधारणा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' पर आधारित है। भारत गाँवों का देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ 640867 गाँव है। इन गाँवों में देश की 68.8 प्रतिशत आबादी रहती है। यह आबादी भारत की रीढ़ कही जा सकती है, जो निम्न आय वर्ग से सम्बन्ध रखती है। किन्तु देश के विकास और भारत के पोषण को आधार प्रदान करती है। स्वयं अभाव में जीवनयापन करने वाला ग्रामीण समाज उस शहरी सभ्यता के विकास की ऊँची बुलन्दियों को छूने में मदद कर रहा है जिसे इण्डिया के नाम से जाना जाता है। महानगरों और छोटे शहरों के चमक–दमक के पीछे पृष्ठभूमि में एक ऐसा समाज भी है, जो आज भी विकास की बाट जोह रहा है। अतः भारत के विकास के लिए आवश्यक है ग्रामीण विकास। बगैर ग्रामीण विकास के अब्दुल कलाम का 2020 तक भारत के विकसित देश बनने का सपना सिर्फ सपना ही रह सकता है। समग्र और वास्तविक विकास की प्राप्ति के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की मुख्यधारा में शामिल करना होगा क्योंकि ग्रामीण विकास ही समग्र विकास की कुँजी है।

मुख्य शब्दः : ग्रामीण विकास, अवधारणा, निर्धनता, आर्थिक विकास, स्थानीय स्वशासन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

[1]. कुरूक्षेत्र, 'ग्रामीण भारत में सामाजिक बदलाव', प्रकाशन विभाग, दिल्ली, 2015
[2]. आलम, महबूब : ''ग्रामीण विकास एवं गरीबी निवारण कार्यक्रम'',, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2014
[3]. गुप्ता, एम. एल. एवं शर्मा, डी. डी. : ''ग्रामीण तथा नगरीय समाजशास्त्र'', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा
[4]. देसाई, ए. आर. : ''भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, 2004
[5]. त्रिपाठी, रेणु : ''ग्रामीण विकास और निर्धनता उन्मूलन'', ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011
[6]. पॉवर, मीनाक्षी : ''पंचायती राज और ग्रामीण विकास'', राधा पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2013